

Date - 15/09/2020

Dr. Sanehlata

Asst. Professor (Guest Faculty)

Dept. of Philosophy

Women's College, Samastipur

Email Id. - Snehababli 1987 @ gmail.com

Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. - II (Hons.)

Topic - Perception : Leibnitz

ईमन या प्रत्यक्ष (Intuition)

ईमन चिद्रूपों की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। यह चिद्रूपों की आन्तरिक शक्ति है जिसके द्वारा प्रत्येक मीनड असंख्य मीनड की रूपांशों को अपने में प्रतिबिम्बित करता है। इसी संदर्भ में लाइबनिज ने मीनड को 'अधुस्य विद्वत्' कहा है। ईमन को लेकर सभी मीनडों में आत्रात्मक गैर है। निम्न कीट के मीनड को अधुस्य में ईमन अस्पष्ट एवं धुंधला होता है जबकि उच्चकीट के मीनड में ईमन अर्पसाकृत स्पष्ट और व्यवस्थित होते हैं।

प्रशासन (Appetition) शक्ति के कारण प्रत्येक मीनड अपने आत्मनिहित लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में विकसित होता है। यह विकास क्रमबद्ध होता है।

मीनड के स्वरूप एवं कार्य के सम्बन्ध में लाइबनिज ने कुछ नियमों का उल्लेख किया है -

(1) निरन्तरता का नियम (Law of Continuity) - लाइबनिज के अनुसार संसार में अितने मीनड हैं जितने चैतन्यता की दृष्टि से सतत तारतम्य घाथा जाता है। इस तारतम्यता को निम्नतम चैतन्य से उच्चतम चैतन्य तक के स्तर पर श्रेणीबद्ध किया जा सकता है। प्रकृति में कहीं भी कोई आकास्मिक विच्छाद (Leap) नहीं पाया जाता।

(2) सादृश्य नियम (Law of Similarity) - गुणों की दृष्टि से सभी मीनड समान हैं। सभी चैतन्य हैं।

(3) वैसादृश्य नियम (Law of Dissimilarity) - विभिन्न मीनड चैतन्य हैं, परन्तु जिनमें चैतन्यता की मात्रा को लेकर अन्तर है। प्रत्येक मीनड का अपना एक व्यक्तित्व है। अतः में कोई भी ही वस्तुएं या

घटनाएँ पूर्णतः समरूप नहीं हो सकती। उसमें कुछ न कुछ गैर आवश्यक ही पाया जाता है। प्रकृति में कहीं कहीं कुछ पुनरावृत्ति नहीं है। इस नियम को ही लाइबनिज ने 'अदृश्यों का आवेग' (Identity of Indiscernibles) नाम दिया है। इसका आशय यही है कि जहाँ गैर आवश्यक रहे जाते हैं, वहाँ वस्तुओं को अलग-अलग जान लिया जाता है।

(4) शक्ति के संरक्षण का नियम (Law of Conservation of Energy) -
मौनडों की शक्ति का योग सदा एक बना रहता है। विश्व में जितनी शक्ति है वह सदा उतनी ही बनी रहती है। न घटती न बढ़ती है।

यद्यपि प्रत्येक मौनड चेतन है परन्तु उनमें चेतना की मात्रा या धारिमाण (Quantity) को लेकर स्तर गैर पाया जाता है। इस आधार पर मौनडों का वर्गीकरण पाँच भागों में किया जा सकता है।